|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 1. Juni 2025 | | |
| **7. Sonntag der Osterzeit C** | | |
| Erste Lesung: Apg 7,55-60; Zweite Lesung: Offb 22,12-14.16-17.20; Evangelium: Joh 17, 20-26 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 319 | Christ fuhr gen Himmel |
|  | GL 339, 1-4 | Ihr Christen hoch erfreuet euch |
|  | GL 481, 1+6!+7! | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 157 | Herr, erbarme dich |
|  | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 173, 1+2 | Gloria in excelsis Deo |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 97, 1-2. 6-7.9 u.12 |  |
|  | Kehrvers: GL 52, 1 | Herr, du bist König |
|  | oder |  |
|  | Psalmlied: |  |
|  | GL 392, 1+4+5 | Lobe den Herren |
|  | oder |  |
|  | GL 346, 1-3 | Atme in uns, Heiliger Geist |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Ich lasse euch nicht als Waisen zurück.* | |
|  | *Ich komme wieder zu euch.* | |
|  | *Dann wird euer Herz sich freuen.* | |
|  |  |  |
| Credo: | sprechen |  |
|  | GL 180 | Credo in unum Deum |
|  | GL 792, 1+2 | Ich glaube, Herr, mit Zuversicht |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 484, 1+4-6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 784 | Send deinen Geist |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 348, 2! + 3 | Du heller Schein |
|  | GL 372, 1-4 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 487, 1-5 | Nun singe Lob |
|  | oder ein Marienlied | |